



Shobha kumari

03 Dec 1987

07:10 PM

Ramgarh

Model: Web-MyKundli

Order No: 119339001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 03/12/1987
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 19:10:00 घंटे
इष्ट _____: 32:19:09 घटी
स्थान _____: Ramgarh
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:37:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:32:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:12:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 19:22:08 घंटे
वेलान्तर _____: 00:10:26 घंटे
साम्पातिक काल _____: 00:09:33 घंटे
सूर्योदय _____: 06:14:20 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:00:34 घंटे
दिनमान _____: 10:46:15 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 17:09:38 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 18:17:58 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: भरणी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: शिव
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गज
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: लो-लोचन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	मार्गशीर्ष	12
पंजाबी	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	18
बंगाली	सन् : 1394	मार्गशीर्ष	17
तमिल	संवत : 2044	कार्तिगई	17
केरल	कोल्लम : 1163	वृश्चिक	17
नेपाली	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	18
चैत्रादि	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	शुक्ल 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 12:50:46
जन्म तिथि _____ : 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:48:14 घंटे
जन्म योग _____ : भरणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : परिघ
योग समाप्ति काल _____ : 18:54:41 घंटे
जन्म योग _____ : शिव
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्ति
करण समाप्ति काल _____ : 12:50:46 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 59:33:58
भोग _____ : 61:09:32
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 0 वर्ष 6 मा 6 दि

घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

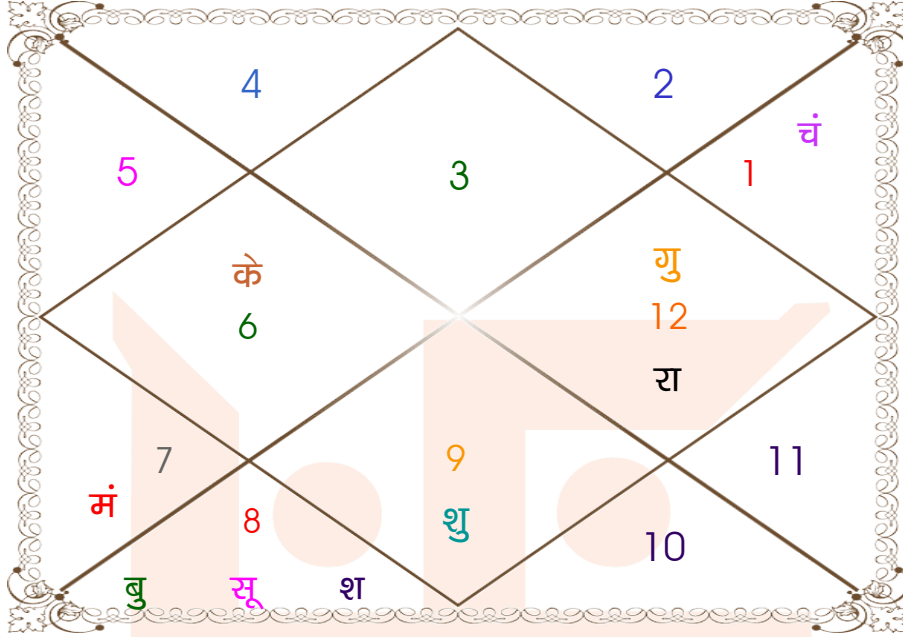
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

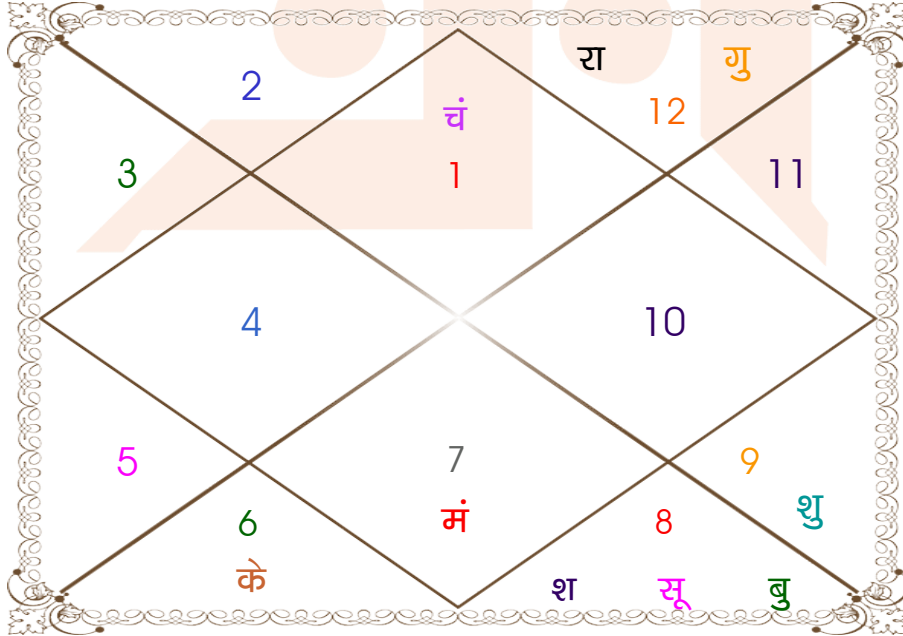
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा गु	चं		ल
शु	श सू बु	मं	के

लग्न कुंडली

	चं	रा गु
ल		
के	मं	शु सू बु श

विंशोत्तरी
शुक्र 0वर्ष 6मा 6दि
शुक्र

03/12/1987

09/06/2088

शुक्र	09/06/1988
सूर्य	10/06/1994
चन्द्र	09/06/2004
मंगल	10/06/2011
राहु	10/06/2029
गुरु	10/06/2045
शनि	09/06/2064
बुध	10/06/2081
केतु	09/06/2088

योगिनी
भद्रिका 0वर्ष 1मा 16दि
उल्का

20/01/2024

19/01/2030

उल्का	19/01/2025
सिद्धा	21/03/2026
संकटा	21/07/2027
मंगला	20/09/2027
पिंगला	20/01/2028
धान्या	20/07/2028
भ्रामरी	21/03/2029
भद्रिका	19/01/2030

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

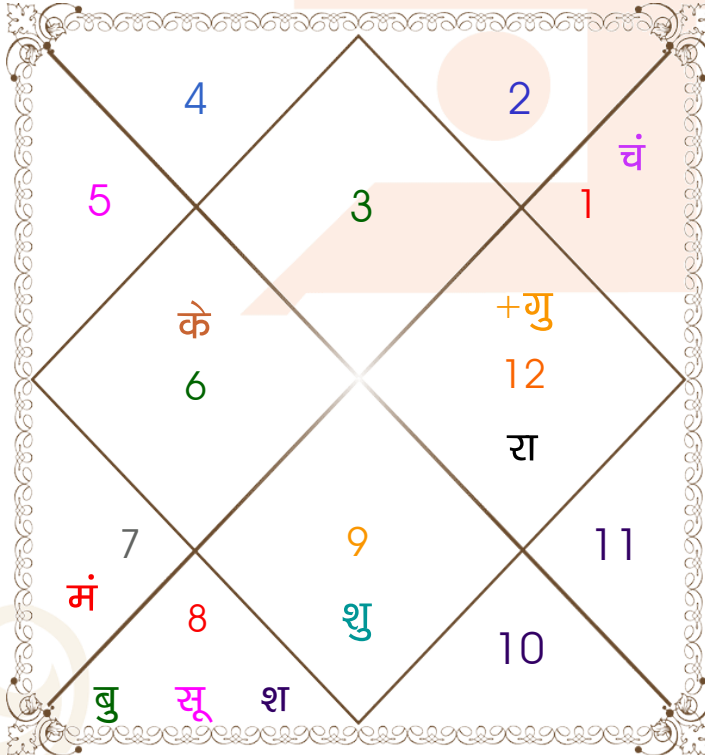
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	18:17:58	319:51:06	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	चंद्र	---
सूर्य			वृश्चि	17:09:38	01:00:50	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			मेष	26:19:18	12:59:35	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	केतु	सम राशि
मंगल			तुला	12:29:04	00:39:20	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	सम राशि
बुध			वृश्चि	06:19:11	01:33:09	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	सम राशि
गुरु	व		मीन	26:19:22	00:02:28	रेवती	3	27	गुरु	बुध	गुरु	स्वराशि
शुक्र			धनु	13:08:04	01:14:30	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	सम राशि
शनि	अ		वृश्चि	28:25:51	00:07:00	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	06:08:30	00:09:42	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
केतु	व		कन्या	06:08:30	00:09:42	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	02:15:48	00:03:32	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
नेप			धनु	13:02:53	00:02:05	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
प्लूटो			तुला	17:25:01	00:02:11	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			मीन	08:54:44	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	शुक्र	--

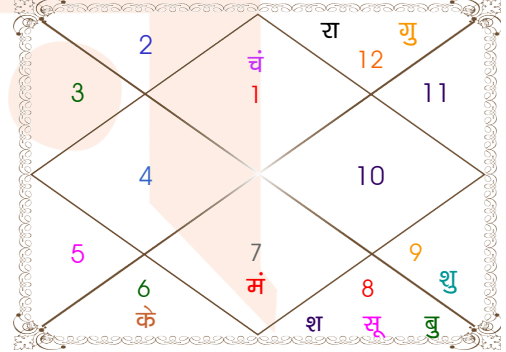
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:17

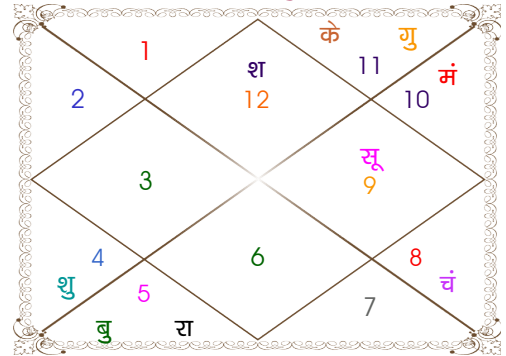
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 01:44:06	मिथुन 18:17:58
2	कर्क 01:44:06	कर्क 15:10:13
3	कर्क 28:36:21	सिंह 12:02:29
4	सिंह 25:28:36	कन्या 08:54:44
5	कन्या 25:28:36	तुला 12:02:29
6	तुला 28:36:21	वृश्चिक 15:10:13
7	धनु 01:44:06	धनु 18:17:58
8	मकर 01:44:06	मकर 15:10:13
9	मकर 28:36:21	कुम्भ 12:02:29
10	कुम्भ 25:28:36	मीन 08:54:44
11	मीन 25:28:36	मेष 12:02:29
12	मेष 28:36:21	वृष 15:10:13

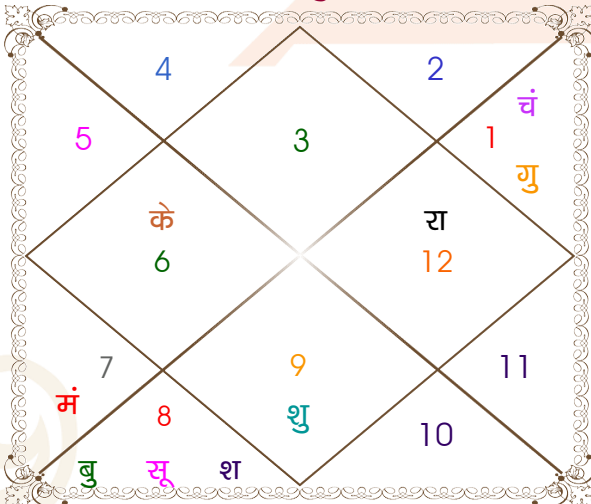
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	18:17:58
2	कर्क	12:02:52
3	सिंह	08:17:29
4	कन्या	08:54:44
5	तुला	13:05:08
6	वृश्चिक	17:05:24
7	धनु	18:17:58
8	मकर	12:02:52
9	कुम्भ	08:17:29
10	मीन	08:54:44
11	मेष	13:05:08
12	वृष	17:05:24

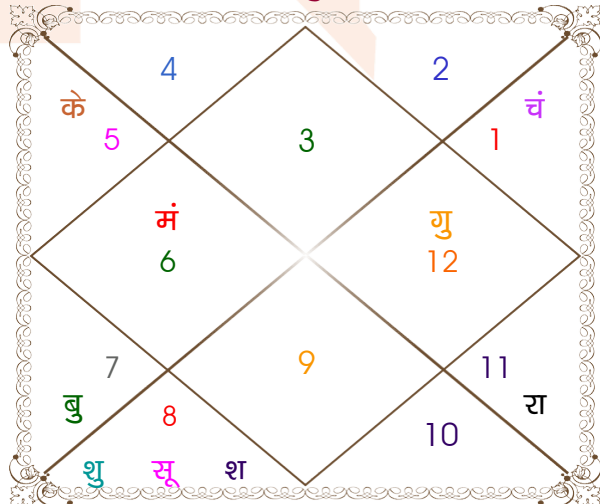
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उभाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 0 वर्ष 6 मास 6 दिन

शुक्र 20 वर्ष 03/12/1987 09/06/1988	सूर्य 6 वर्ष 09/06/1988 10/06/1994	चंद्र 10 वर्ष 10/06/1994 09/06/2004	मंगल 7 वर्ष 09/06/2004 10/06/2011	राहु 18 वर्ष 10/06/2011 10/06/2029
00/00/0000	सूर्य 27/09/1988	चंद्र 10/04/1995	मंगल 05/11/2004	राहु 20/02/2014
00/00/0000	चंद्र 28/03/1989	मंगल 09/11/1995	राहु 24/11/2005	गुरु 16/07/2016
00/00/0000	मंगल 03/08/1989	राहु 10/05/1997	गुरु 31/10/2006	शनि 23/05/2019
00/00/0000	राहु 28/06/1990	गुरु 09/09/1998	शनि 10/12/2007	बुध 09/12/2021
00/00/0000	गुरु 16/04/1991	शनि 09/04/2000	बुध 06/12/2008	केतु 28/12/2022
00/00/0000	शनि 28/03/1992	बुध 09/09/2001	केतु 04/05/2009	शुक्र 27/12/2025
00/00/0000	बुध 02/02/1993	केतु 10/04/2002	शुक्र 04/07/2010	सूर्य 21/11/2026
03/12/1987	केतु 10/06/1993	शुक्र 10/12/2003	सूर्य 09/11/2010	चंद्र 22/05/2028
केतु 09/06/1988	शुक्र 10/06/1994	सूर्य 09/06/2004	चंद्र 10/06/2011	मंगल 10/06/2029
गुरु 16 वर्ष 10/06/2029 10/06/2045	शनि 19 वर्ष 10/06/2045 09/06/2064	बुध 17 वर्ष 09/06/2064 10/06/2081	केतु 7 वर्ष 10/06/2081 09/06/2088	शुक्र 20 वर्ष 09/06/2088 04/12/2107
गुरु 29/07/2031	शनि 12/06/2048	बुध 06/11/2066	केतु 06/11/2081	शुक्र 10/10/2091
शनि 08/02/2034	बुध 20/02/2051	केतु 03/11/2067	शुक्र 06/01/2083	सूर्य 09/10/2092
बुध 16/05/2036	केतु 31/03/2052	शुक्र 03/09/2070	सूर्य 14/05/2083	चंद्र 10/06/2094
केतु 22/04/2037	शुक्र 01/06/2055	सूर्य 10/07/2071	चंद्र 13/12/2083	मंगल 10/08/2095
शुक्र 22/12/2039	सूर्य 13/05/2056	चंद्र 09/12/2072	मंगल 10/05/2084	राहु 10/08/2098
सूर्य 09/10/2040	चंद्र 12/12/2057	मंगल 06/12/2073	राहु 28/05/2085	गुरु 11/04/2101
चंद्र 08/02/2042	मंगल 21/01/2059	राहु 24/06/2076	गुरु 04/05/2086	शनि 10/06/2104
मंगल 15/01/2043	राहु 27/11/2061	गुरु 30/09/2078	शनि 13/06/2087	बुध 11/04/2107
राहु 10/06/2045	गुरु 09/06/2064	शनि 10/06/2081	बुध 09/06/2088	केतु 04/12/2107

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 0 वर्ष 6 मा 8 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र 28/12/2022 27/12/2025	राहु - सूर्य 27/12/2025 21/11/2026	राहु - चंद्र 21/11/2026 22/05/2028	राहु - मंगल 22/05/2028 10/06/2029	गुरु - गुरु 10/06/2029 29/07/2031
शुक्र 28/06/2023 सूर्य 22/08/2023 चंद्र 21/11/2023 मंगल 24/01/2024 राहु 07/07/2024 गुरु 30/11/2024 शनि 22/05/2025 बुध 24/10/2025 केतु 27/12/2025	सूर्य 13/01/2026 चंद्र 09/02/2026 मंगल 28/02/2026 राहु 19/04/2026 गुरु 02/06/2026 शनि 24/07/2026 बुध 08/09/2026 केतु 27/09/2026 शुक्र 21/11/2026	चंद्र 06/01/2027 मंगल 07/02/2027 राहु 30/04/2027 गुरु 12/07/2027 शनि 07/10/2027 बुध 23/12/2027 केतु 24/01/2028 शुक्र 25/04/2028 सूर्य 22/05/2028	मंगल 13/06/2028 राहु 10/08/2028 गुरु 30/09/2028 शनि 30/11/2028 बुध 23/01/2029 केतु 14/02/2029 शुक्र 19/04/2029 सूर्य 09/05/2029 चंद्र 10/06/2029	गुरु 21/09/2029 शनि 23/01/2030 बुध 13/05/2030 केतु 28/06/2030 शुक्र 04/11/2030 सूर्य 13/12/2030 चंद्र 16/02/2031 मंगल 03/04/2031 राहु 29/07/2031
गुरु - शनि 29/07/2031 08/02/2034	गुरु - बुध 08/02/2034 16/05/2036	गुरु - केतु 16/05/2036 22/04/2037	गुरु - शुक्र 22/04/2037 22/12/2039	गुरु - सूर्य 22/12/2039 09/10/2040
शनि 22/12/2031 बुध 01/05/2032 केतु 24/06/2032 शुक्र 26/11/2032 सूर्य 11/01/2033 चंद्र 29/03/2033 मंगल 22/05/2033 राहु 08/10/2033 गुरु 08/02/2034	बुध 05/06/2034 केतु 24/07/2034 शुक्र 09/12/2034 सूर्य 19/01/2035 चंद्र 29/03/2035 मंगल 16/05/2035 राहु 17/09/2035 गुरु 06/01/2036 शनि 16/05/2036	केतु 05/06/2036 शुक्र 01/08/2036 सूर्य 18/08/2036 चंद्र 15/09/2036 मंगल 05/10/2036 राहु 25/11/2036 गुरु 10/01/2037 शनि 05/03/2037 बुध 22/04/2037	शुक्र 01/10/2037 सूर्य 19/11/2037 चंद्र 08/02/2038 मंगल 06/04/2038 राहु 30/08/2038 गुरु 07/01/2039 शनि 10/06/2039 बुध 26/10/2039 केतु 22/12/2039	सूर्य 05/01/2040 चंद्र 30/01/2040 मंगल 16/02/2040 राहु 31/03/2040 गुरु 09/05/2040 शनि 24/06/2040 बुध 04/08/2040 केतु 21/08/2040 शुक्र 09/10/2040
गुरु - चंद्र 09/10/2040 08/02/2042	गुरु - मंगल 08/02/2042 15/01/2043	गुरु - राहु 15/01/2043 10/06/2045	शनि - शनि 10/06/2045 12/06/2048	शनि - बुध 12/06/2048 20/02/2051
चंद्र 19/11/2040 मंगल 17/12/2040 राहु 28/02/2041 गुरु 04/05/2041 शनि 20/07/2041 बुध 27/09/2041 केतु 26/10/2041 शुक्र 15/01/2042 सूर्य 08/02/2042	मंगल 28/02/2042 राहु 20/04/2042 गुरु 04/06/2042 शनि 28/07/2042 बुध 15/09/2042 केतु 05/10/2042 शुक्र 30/11/2042 सूर्य 18/12/2042 चंद्र 15/01/2043	राहु 26/05/2043 गुरु 20/09/2043 शनि 06/02/2044 बुध 09/06/2044 केतु 30/07/2044 शुक्र 24/12/2044 सूर्य 05/02/2045 चंद्र 19/04/2045 मंगल 10/06/2045	शनि 30/11/2045 बुध 05/05/2046 केतु 08/07/2046 शुक्र 07/01/2047 सूर्य 03/03/2047 चंद्र 03/06/2047 मंगल 06/08/2047 राहु 18/01/2048 गुरु 12/06/2048	बुध 30/10/2048 केतु 26/12/2048 शुक्र 08/06/2049 सूर्य 27/07/2049 चंद्र 17/10/2049 मंगल 13/12/2049 राहु 10/05/2050 गुरु 18/09/2050 शनि 20/02/2051

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 4
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

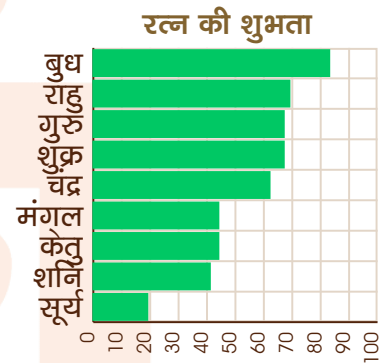
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	83%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	67%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
हीरा	शुक्र	67%	दम्पति, कम खर्च, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	62%	धनार्जन, धन
मूंगा	मंगल	44%	सन्तति कष्ट, हानि, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	44%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	41%	शत्रु व रोग, दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
माणिक्य	सूर्य	19%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	09/06/1988	0%	50%	44%	89%	67%	80%	52%	75%	53%
सूर्य	10/06/1994	44%	69%	53%	83%	73%	55%	16%	56%	19%
चंद्र	09/06/2004	31%	75%	44%	89%	67%	67%	41%	56%	19%
मंगल	10/06/2011	31%	69%	59%	70%	73%	67%	41%	56%	53%
राहु	10/06/2029	0%	50%	19%	83%	67%	73%	52%	81%	19%
गुरु	10/06/2045	31%	69%	53%	70%	79%	55%	41%	69%	44%
शनि	09/06/2064	0%	50%	19%	89%	67%	73%	58%	75%	19%
बुध	10/06/2081	31%	50%	44%	95%	67%	73%	41%	69%	44%
केतु	09/06/2088	0%	50%	53%	83%	67%	73%	16%	56%	59%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/12/1987-17/12/1987	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
सम
सम
अशुभ

क्षेत्र

शत्रु से कष्ट
व्यावसाय
अल्प बचत
कम खर्च
धन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतएव इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में भी उग्रता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन ये अल्पकालिक रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप पित या गर्मी आदि से यदा कदा परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध उत्पन्न हो सकता है लेकिन अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी तथा दाम्पत्य जीवन सामान्यतया संतोषप्रद रहेगा।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी भी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य क्षेत्र में परिश्रम तथा पराक्रम से सफलता अर्जित करेंगी। समाज से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा कोध के भाव की प्रबलता दृष्टि गोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति भी प्रभावित होगी परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव आपके पारिवारिक जीवन में नहीं होगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक खुशहाल एवं सुखी बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसके द्वारा आपका मंगली दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार दोष के भंग होने

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पर आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होगी। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, बुध और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानि एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुखर्ष, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरहृदय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, कोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(10/06/2011 - 10/06/2029)

राहु की अन्तर्दशा 10/06/2011 को आरम्भ और 10/06/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु-दशम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि-चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार-व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलेंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उड्डयन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, भोजन, प्रौद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(28/12/2022 - 27/12/2025)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/06/2011 को प्रारंभ होकर 10/06/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 28/12/2022 को प्रारंभ होकर 27/12/2025 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव, लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी विषय-वासनाओं में रुचि हो सकती है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक हो सकता है मगर आपकी दिलचस्पी मौज-मस्ती और सुरापान में हो सकती है। आपके बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रिय बनेंगे। विवाहेतर संबंध हो सकते हैं, जिस कारण कोई गुप्त रोग पनप सकता है। विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ साझेदारी वाले व्यापार में लाभ हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(27/12/2025 - 21/11/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/06/2011 को प्रारंभ होकर 10/06/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 27/12/2025 को प्रारंभ होकर 21/11/2026 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। छठे भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी जन्मपत्री के बारहवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है लेकिन प्रसिद्ध और सफल होंगे। राजनीति में भी कामयाब हो सकते हैं। पैसे की कोई कमी नहीं होगी और प्रत्येक परियोजना पूर्ण होगी। छाती और हृदय के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

अंतर्दशा :- राहु - चन्द्र
(21/11/2026 - 22/05/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/06/2011 को प्रारंभ होकर 10/06/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 21/11/2026 को प्रारंभ होकर 22/05/2028 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप नेकी के कार्य करेंगे, समाज में प्रतिष्ठा होगी। धन-संपदा को एकत्र करने की शुरुआत हो सकती है। धनागम, नम्रता और ज्ञान के बल पर समाज में सम्मान बढ़ेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंतर्दशा :- राहु - मंगल
(22/05/2028 - 10/06/2029)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 10/06/2011 को प्रारंभ होकर 10/06/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 22/05/2028 को प्रारंभ होकर 10/06/2029 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 8, 11, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप निर्णय लेने में जल्दबाजी कर सकते हैं, जिससे बाद में पछताना पड़ सकता है। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा, भावुक होंगे। क्रोध अधिक रहेगा, धोखाधड़ी की भावना भी मन में आ सकती है। उदर का या अन्य कोई रोग हो सकता है। मस्तिष्क विचलित हो सकता है, दूसरों का बुरा करने की भावना मन में आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का लाल मूंगा सोने या तांबे में जड़वाकर, कच्चे दूध से धोकर, मंगल यंत्र से 11 बार छूकर, मंगलवार को प्रातःकाल हनुमान, या गणेश जी, या

**महादशा :- गुरु
(10/06/2029 - 10/06/2045)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 10/06/2029 को आरम्भ और 10/06/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरू करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(10/06/2029 - 29/07/2031)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/06/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/06/2029 को प्रारंभ होकर 29/07/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपका सम्मान बढ़ेगा। प्रोन्नति, सफलता, धनी होने का योग है। सुख के साधन और वाहन आदि उपलब्ध रहेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। भूमि आदि से आय में वृद्धि होगी। निवास में परिवर्तन के लिए समय उपयुक्त है। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। अच्छी नौकरी मिल सकती है। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता को कई माध्यमों से धनलाभ होगा। माता की यात्राएं होंगी; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित धनलाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो रोजगार के सुअवसर मिलेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, साख बढ़ेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता सफल और धनी बनेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः